अमर चित्र कथा

डायमण्ड कॉमिक्स प्रस्तुति

जवाहरलाल नेह

DA-436 15.00

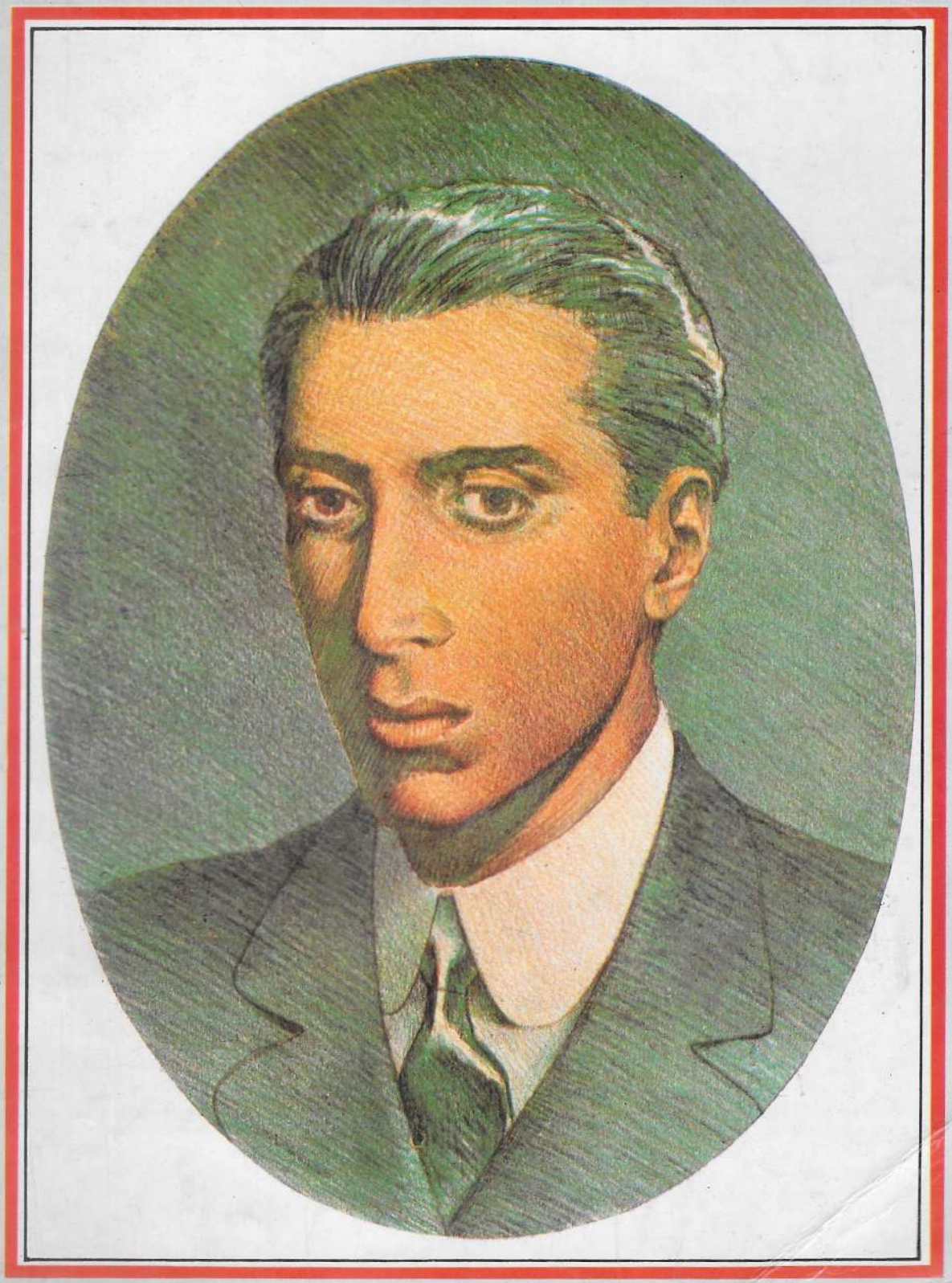

अमर चित्रकथा द्वारा भारतीय संस्कृति से परिचय बढ़ायें

डायमण्ड कॉमिक्स

अमर चित्रकथा अब डायमण्ड कामिक्स में

जवाहरलाल नेहरू

आरंभिक वर्ष

"मुझे उस महान विरासत पर फ़ख्र है जो हमारी थी और आज भी है और मुझे इसका भी बोध है कि हम सभी की मानिंद मैं भी उस अटूट श्रृंखला की एक कड़ी हूं जो हिंदुस्तान के बहुत पुराने अतीत में इतिहास की उषा तक चली गयी है। उस श्रृंखला को मैं तोड़ना नहीं चाहता, क्योंकि मैं उसे बेशकीमती मानता हूं और उससे प्रेरणा पाना चाहता हूं।"

जवाहरलाल नेहरू के वसीयतनामे से लिये गये इन शब्दों से आप इसका औचित्य समझ जायेंगे कि हमने नेहरू को अमर चित्रकथा के अंतिम नियमित शीर्षक के रूप में क्यों चुना। इस सीरीज़ में हमने भारतीय पुराणों, आख्यानों, इतिहास और लोकसाहित्य में से अनेक कथाएं पेश की हैं।

इस अंक में नेहरू के पूर्वजों के परिचय के साथ उनके जीवन के आरंभिक वर्षों का विवरण दिया गया है, जिन्होंने भारत के इस महान निर्माता को गढ़ा और तराशा।

डायमण्ड कामिक्स में प्रकाशित अमर चित्रकथायें

- कृष्ण
- शकुन्तला
- राम
- हनुमान
- हरिश्चन्द्र
- गुरु गोबिन्द सिंह
- अशोक
- गुरु नानक
- गुरु तेगबहादुर
- गुरु हरगोबिन्द
- बुद्ध
- शिवाजी
- झांसी की रानी
- कबीर
- शेर और कठफोड़वा
- महात्मा गांधी-1
- महात्मा गांधी-2
- महावीर
- गणेश
- विवेकानंद
- बन्दा बहादुर
- गुरु अर्जन देव
- राणा प्रताप
- पंचतंत्र I-IV
- चाणक्य
- पृथ्वीराज चौहान
- आम्रपाली
- सिकन्दर और पौरुव
- उर्वशी
- वसंतसेना
- बीरबल I-III
- हितोपदेश I-III
- जातक कथायें I-IV
- गीता
- राजा भोज
- गंगा
- चन्द्रशेखर आजाद
- तानसेन
- हरिसिंह नलवा
- दुर्गा की कथाएं
- अकबर
- कालिदास
- जवाहर लाल नेहरू
- समर्थ रामदास
- सूरदास
- रविन्द्रनाथ ठाकुर
- चैतन्य महाप्रभु
- डा. अम्बेडकर
- दुर्गावती
- प्रह्लाद
- विक्रमादित्य
- सावित्री
- पद्मिनी
- नल दमयंती
- एकनाथ
- ज्ञानेश्वर
- शिव पार्वती
- अभिमन्यु
- सुदामा
- गुरु रविदास
- सुभाष चन्द्र बोस
- लोकमान्य तिलक
- रामकृष्ण परमहंस
- सूर्य
- सांईबाबा की कहानियां
- मीराबाई
- अर्जुन की कथाएं
- शाहजहाँ
- शंकर देव
- हर्ष
- विश्वामित्र
- भगत सिंह
- कर्ण
- द्रौपदी
- आदिशंकराचार्य
- रंजीत सिंह
- तुलसीदास
- विष्णु की कहानियां
- भीष्म
- परशुराम
- शेरशाह
- जहांगीर
- छत्रपाल
- साधुवासवानी

Editor: Anant Pai

© 1994 India Book House Pvt. Ltd. Bombay

Published by : Narender Kumar for Diamond Comics Pvt. Ltd. X-30, OKHLA INDUSTRIAL AREA PHASE-II, NEW DELHI-110020
and Printed at : Best Photo Offset Printers Okhla Phase-II New Delhi.

जवाहरलाल नेहरू : आरंभिक वर्ष

साल था 1716 ई. और जगह थी कश्मीर की घाटी, जो 'केसर की क्यारी' और 'धरती का स्वर्ग' जैसे नामों से मशहूर है.

संस्कृत और फारसी के जाने-माने विद्वान पं. राज कौल ने एक महत्वपूर्ण फैसला किया.

मैं बादशाह फर्रुखसियर के दरबार में हाजिरी बजाने दिल्ली जाऊंगा. अगर उन्होंने मुझे दरबार में बुलाया तो...

...तो शायद हमें कश्मीर छोड़ना पड़े.

हे राम! स्वर्ग जैसा अपना सुंदर कश्मीर छोड़ कर मैदानों में रहना होगा!

और सचमुच ही उन्हें कश्मीर छोड़ना पड़ा. बादशाह फर्रुखसियर ने राज कौल को एक मकान और कुछ गांव आगरा में बख्शे.

राज कौल अपने परिवार के साथ दिल्ली में एक नहर के किनारे एक मकान में बस गये.

मुझे ये पेटियां पं. राज कौल को पहुंचानी हैं, वे कहां रहते हैं?

कौल-नेहरू का मकान पूछ रहे हो? नहर के किनारे का वह मकान उनका है.

कौल-नेहरू परिवार लगभग सवा सौ साल दिल्ली में रहा. पर 1850 ई. तक उनकी माली हालत काफी गिर गयी थी. राज कौल के एक वंशज गंगाधर नेहरू दिल्ली के कोतवाल थे.

*'नेहरू' शब्द 'नहर' शब्द पर आधारित है.

सन 1857 के विद्रोह ने दिल्ली को दहला दिया. खून खच्चर हुआ. अराजकता फैली. काफी लोग शहर छोड़ कर भागे, कोतवाल गंगाधर नेहरू भी उनमें थे.

सुनो इंद्राणी! अब दिल्ली में रहने में खतरा है. हम फौरन आगरा चल पड़ेंगे. बच्चों को तैयार करो.

ओ बंसीधर! ओ नंदलाल! आओ, सामान बांधने में पिताजी का हाथ बंटाओ. मैं लड़कियों को तैयार करती हूं.

कुछ ही देर में गंगाधर परिवार-समेत आगरा रवाना हो गये.

ठहरो!

बोला, यह छोकरी कौन है?

मेरी बहन है, सर!

क्या बकता है?

तू समझता है, ऐसी गोरी-चिट्टी और भूरे बालोंवाली लड़की को मैं हिन्दुस्तानी मान लूंगा?

इसे गिरफ्तार कर लो. अंग्रेज लड़की को भगा लाया है.

नहीं सर! हम कश्मीरी है. कश्मीरियों का रंग गोरा होता है.

तू झूठ बोलता है. अभी तुझे हम फांसी पर चढ़ायेंगे.

यह कोई कोरी धमकी न थी. उथल-पुथल के उस दौर में अंग्रेज सिपाही जिसे भी कसूरवार समझते, उसे हाथोंहाथ कड़ी से कड़ी सजा दे डालते थे. मगर सौभाग्य से एक परिचित आदमी उधर से निकला.

क्या बात है, नंद? वह गोरा तेरी बहन पटरानी को कहां लिये जा रहा है?

सर! इनसे पूछ लीजिए कि यह मेरी बहन है या नहीं. हमें जाने दीजिए सर!

अच्छा, ठीक है! जाओ!

नंदलाल थोड़ी अंग्रेजी जानते थे. वह काम आयी.

आगरा पहुंच कर परिवार ने नये सिरे से जिंदगी शुरू की. पर 1861 में गंगाधर नेहरू चल बसे. इंद्राणी ने अपने दोनों बेटों को बुला कर कहा-

तुम लोगों के पिता नहीं रहे. बंसीधर, तुम्हें अब परिवार को संभालना होगा.

हां मां, मैं न्याय विभाग में नौकरी पाने की कोशिश करूंगा.

तीन महीने बाद इंद्राणीजी के तीसरा लड़का मोतीलाल पैदा हुआ. तब तक बंसीधर को अदालत में फैसले लिखनेवाले लिपिक का काम मिल गया. आगे चलकर वे सब-जज बने.

नंदलाल राजस्थान में खेतड़ी नाम के ठिकाने के राजा के शिक्षक नियुक्त हुए और फिर मुख्य मंत्री बनाये गये.

खेतड़ी में ही मोतीलाल ने अरबी और फारसी सीखी. फिर वे कानपुर जा कर हाईस्कूल में भरती हुए. बड़े भाई बंसीधर तब वहां थे.

مشک آنست که ببوید
نه که عطار بگوید

खेतड़ी के राजासाहब की मृत्यु के बाद नंदलाल ने वकालत की परीक्षा पास करके आगरा में प्रैक्टिस शुरू की.

मां, हाईकोर्ट आगरा से इलाहाबाद ले जाया जा रहा है.

हमें भी वहीं जा कर रहना पड़ेगा.

ठीक कहते हो, नंदलाल. बंसीधर का तो तबादला होता रहता है. हम सब का तुम्हारे संग रहना ठीक होगा.

मोतीलाल इलाहाबाद में म्यूर कालेज में भरती हो गये.

मोतीलाल, तुम्हें बी.ए. का इम्तहान देने कल आगरा जाना है. मुझे उम्मीद है, तुम अच्छे नंबर लोगे.

मैं भी यही उम्मीद करता हूं, प्रोफेसर हॅरिसन साहब.

जवाहर लाल नेहरू

मगर आगरा में -

उफ्! मेरा पहला पर्चा तो कबाड़ा हो गया. फेल होना तय है. दूसरे पर्चे देना बेकार है...

उसके बजाय ताज महल आकर उसकी खूबसूरती क्यों न निहारूं!

बाद में प्रो. हैरिसन ने मोतीलाल को फटकारा.

पहले पर्चे में तुम्हें खासे अच्छे नंबर मिले थे. पर तुमने हथियार डाल दिये. सरासर नेवकूफी की तुमने.

अब क्या करोगे तुम?

मैं कानून पढ़ूंगा, सर!

मोतीलाल ने हाईकोर्ट की वकालत की सनद की परीक्षा दी.

वाह, मोती! तुम इम्तहान में अव्वल रहे!

तुम्हें लम्सडेन स्वर्णपदक भी मिला है. मुझे तुम पर फख्र है.

मोतीलाल ने परिवार के एक वकील मित्र के दफ्तर में जूनियर की हैसियत से काम शुरू किया. वकालत की तरह खेलों में भी उनका मन रमता था.

यह मिसिल जल्दी तैयार कर दूंगा.

आज का कुश्ती-दंगल जबरदस्त है. उसे नहीं चूकना है.

मगर बड़े भाई नंदलाल की मृत्यु ने उन्हें हिला कर रख दिया. नंदलाल उनके लिए पितातुल्य थे. 1897 में पचीस बरस के मोतीलाल ने परिवार की पतवार संभाली. नंदलाल के सात बच्चे भी उस परिवार में थे.

मोतीलालजी, दस बज गये. घर नहीं आयेंगे?

पर जमींदारी का यह मामला मुझे बारीकी से समझना है.

मोती, तुम इतनी ज्यादा मेहनत क्यों करते हो? तुम्हें तो आय भी खासी अच्छी होने लगी है.

भाईसाहब चले गये. उनके सारे मामले मुझे मिले. जैसे उन्होंने मुझे पाला-पोसा, उसी तरह मुझे भी उनके बच्चों को पालना-पोसना चाहिए.

* घर में रहकर बच्चों को पढ़ानेवाली मास्टरानी

इस तरह बालक जवाहरलाल की पढ़ाई घर पर ही गवर्नेसों की देखरेख में होती रही. बेशक बीच में कुछ दिन वह अपने चचेरे भाई के साथ कान्वेंट में पढ़ा.

जवाहर, तेरह का पहाड़ा फिर से दुहराओ. आज तुम्हारा मन कहां है?

कल मेरा जन्मदिन है न! जन्मदिन मुझे बहुत अच्छा लगता है.

उसका जन्मदिन बड़ी धूमधाम से मनता था. सुबह उसे एक बड़े से तराजू में बैठा कर तोला जाता था.

मुंशीजी, ये अनाज ग़रीबों में बंटवा दीजिए.

शाम को बढ़िया तोहफ़े मिलते और शानदार पार्टी होती.

लो, जन्मदिन तो बीत चला! पिताजी, क्या रोज मेरा जन्मदिन नहीं मनाया जा सकता?

नहीं, बेटे, नहीं. जन्मदिन साल में सिर्फ एक बार आता है.

मोतीलाल प्यार तो करते थे, पर अनुशासन भी रखते थे. एक दिन छह बरस का जवाहर पिता के अध्ययन कक्ष में चला गया.

दो फाउंटन पेन! पिताजी एक साथ दोनों से तो लिखते नहीं होंगे.

अगर एक मैं रख लूं तो?

चटपट जवाहर ने एक फाउंटन पेन अपनी जेब में डाल लिया. थोड़ी देर में -

धत्तेरे की! मेरा पेन कहां गया. मेरी मेज किसने छुई?

अब चुप रहने में ही भलाई है. वरना पिटाई होगी.

मगर अपराधी पकड़ा गया और उसकी खासी धुलाई हुई.

हाय-हाय! हाऽऽय!

जवाहर के बदन पर मार के निशान उभर आये. रोता-रोता वह मां के पास गया.

अब चुप हो जा. मैं मलहम लगा देती हूं, सब ठीक हो जायेगा.

पिता के प्रति प्यार और प्रशंसाभाव तो कम नहीं हुआ, मगर उसमें जरा भय का पुट मिल गया. मगर मां के साथ वही लाड-प्यार चलता.

तैयार हो जाओ, जवाहर! आज गंगाजी नहाने जाना है.

पिताजी कहते हैं, ये सब औरतों के काम हैं. पर अम्मा मुझे तुम्हारे साथ मंदिरों और मेलों में जाना अच्छा लगता है.

अपनी मां और चाचियों-मौसियों से जवाहर ने हिंदू पुराणों की बहुत-सी कहानियां सुनी.

... जब राम, सीता और लक्ष्मण ने गंगा पार की, सीताजी ने सुरक्षित वापसी के लिए प्रार्थना की.

नेहरू परिवार में होली, दीवाली, ईद, जन्माष्टमी सभी त्योहार बड़े उत्साह से मनाये जाते, कश्मीरी नववर्ष-दिन नवरोज भी बाकायदा मनाया जाता.

दही खाओ जिससे तुम्हारा पूरा साल मधुर रहे, फिर आईने में अपना मुंह देखो - मगर मुस्कराते हुए.

... जिससे सारा साल मुस्कानों में बीते.

हां, मां.

मुंशी मुबारक अली घरेलू नौकरों के मुकाबले से ज्यादा घर के सदस्य थे. ईद के दिन वे जवाहर को मस्जिद ले जाते.

मस्जिद से मेरे घर चलेंगे - मिठाई खाने.

हां, मुंशीजी, मुझे आपके घर की सेवैयां बहुत पसंद हैं.

बालक जवाहर कुछ अकेलापन महसूस करता. घर में खूब सारे बच्चे भाई-बहन थे तो. मगर उसका हमउम्र कोई न था, जिसके साथ वह खेल सके.

अकेलापन मिटाने जवाहर मुबारक अली का सहारा लिया करता.

मुंशीजी, मैं सो नहीं सकता. मुझे बुरे-बुरे सपने आते हैं.

तो आइए छोटे साहब, मैं आपको अलिफ लैला की कहानियां सुनाऊंगा.

मुंशीजी के पास जवाहर को सुनाने के लिए कहानियों का अकूत खजाना था.

रोज शाम को जवाहर एक सवार के साथ एक टट्टू पर सवारी करने निकलता–

साहब, छोटे साहब का टट्टू उनके बिना ही लौट आया है.

?

मैं जाकर उसे देखूंगा.

हम लोग भी साथ चलेंगे.

खोजी टोली कुछ ही दूर गयी थी कि...

लो, वह रहा!

भगवान की दया से तुम सुरक्षित हो!

जवाहर को सबने हाथोहाथ उठा लिया और दुलार किया.

बहुत जोर से गिरे थे क्या बेटा?

मुझे चोट तो कुछ लगी नहीं. पर बहादुर कहलाना अच्छा लग रहा है.

तुम्हें चोट तो नहीं लगी?

कैसा बहादुर लड़का है!

जब जवाहर कोई दस साल का था, परिवार आनंद भवन में रहने चला आया. बहुत बड़ा घर था, जिसके बीचोंबीच आंगन था. चारों ओर था सुंदर बगीचा, जिसमें फूलों की क्यारियां, फव्वारे, तैरने का ताल और टेनिसकोर्ट थे.

उस विशाल घर में मोतीलाल ने और कमरे जुड़वाये. जवाहर घंटों तक राज और मिस्त्रियों का काम देखा करता.

एक और गजब चीज उन्हीं दिनों होनेवाली थी.

18 अगस्त 1900 को उसकी बहन पैदा हुई, जिसका नाम सरूप कुमारी* रखा गया. मोतीलाल तब अपनी पहली यूरोप-यात्रा पर गये हुए थे. एक डाक्टर ने आकर जवाहर को खबर दी.

मोतीलाल ने विदेश-यात्रा का पूरा आनंद उठाया.

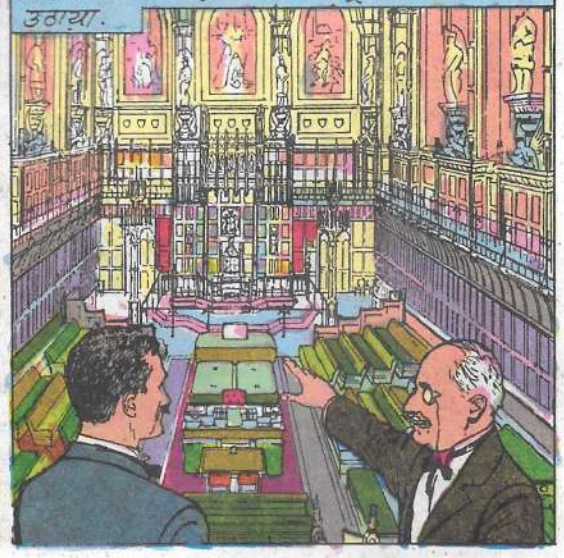

* आगे चलकर ये विजयलक्ष्मी कहलायीं.

मगर उनके लौटने पर पुराणपंथी कश्मीरी समाज में खलबली मच गयी.

समुद्रपार जाने से आप अपवित्र हो गये हैं. उसका प्रायश्चित्त करके शुद्ध हो जाइए.

मैं वह सब नहीं करूंगा. मुझे इन ढोंग-ढकोसलों में विश्वास नहीं है.

तो आप को जात-बाहर कर दिया जायेगा.

मुझे भरोसा है कि जिन्हें मुझसे लगाव है, वे इसकी फिक्र नहीं करेंगे.

लोगों की नुक्ताचीनी का मोतीलाल पर रत्ती-भर भी असर नहीं पड़ा, वे दुबारा यूरोप गये और साथ में एक कार लाये. तब देश में इनी-गिनी कारें थीं. वकालत से अपार पैसा आ रहा था. फ़ेहरू-परिवार शाही ठाट से रहता - ढेरों पोशाकें, कीमती शराबों का जखीरा, बीसियों नौकर. दो संस्कृतियां साथ-साथ पनप रही थीं आनंद भवन में. घर का पश्चिमी रंग-ढंग वाला हिस्सा मोतीलाल के ताबे में था. परंपरागत हिंदू हिस्से पर स्त्रियों का राज था. मोतीलाल शानदार पार्टियां और दावतें दिया करते, जिनमें यूरोपियन, हिंदुस्तानी राजा-महाराजा व नवाब शरीक होते.

आपने फिर बाजी मार ली मोतीलालजी! आपकी कार इलाहाबाद में पहली है!

और बिजली भी सबसे पहले आपके घर ही आयी.

बालक जवाहर पिता की पार्टियों को मुग्ध हो कर देखता.

पिताजी, सबको इतना हंसा कैसे पाते हैं? और उनके हाथ में क्या है? खून* जैसा दिख रहा है.

मां को बताना पड़ेगा.

तो मैं अर्ज कर रहा था...

अरे, तुम यहां क्या कर रहे हो? हो जाओ रफूचक्कर!

हाय! बुरा फंसा. अब सब लोगों के सामने डांट पड़ेगी.

घबराये लड़के को पिता ने उठा लिया.

अब सजा के तौर पर तुम्हें दस मिनट मेरी गोद में बैठना होगा.

चलो, बच गया. पिताजी नाराज नहीं हुए.

आनंदभवन में जब तैरने की पार्टी होती, जवाहर खूब मजा लेता.

मोतीलालजी, आपका बेटा तो बड़ा अच्छा तैराक है!

होगा ही. उसकी पूरी गर्मियां पूल में ही तो बीतती हैं.

सन 1901 में जब जवाहर लगभग 12 बरस का था...

कल मिस्टर फर्डिनेंड ब्रूक्स आयेंगे, अब से वे तुम्हारे शिक्षक होंगे. अच्छा सलूक करना.

अच्छा, पिताजी.

मि. ब्रूक्स अगले तीन साल शिक्षक के रूप में आनंद भवन में रहे. बालक जवाहर पर उनका बड़ा प्रभाव पड़ा.

क्या हम पाठ्य पुस्तक नहीं पढ़ेंगे, मि. ब्रूक्स?

बाद में. अभी मैं चाहता हूं कि तुम ये कहानियां पढ़ो.

* असल में वह लाल अंगूरी शराब थी.

ब्रूक्स के असर से जवाहर में पढ़ने का शौक पैदा हुआ.
PRISONER OF ZENDA
KIPLING
THREE MEN IN A BOAT
DON QUIXOTE CERVANTES
JUNGLE BOOK • KIPLING
मि. ब्रूक्स, क्या आज हम गीता पढ़ेंगे?
हां, यह गीता का अंग्रेजी अनुवाद है; जो मैंने खुद किया है.
तो क्या आपको संस्कृत आती है?
हां, मैंने संस्कृत सीखी, जिससे मैं भारतीय दर्शन समझ सकूं
GITA
पर संस्कृत का व्याकरण मेरे पल्ले ही नहीं पड़ता. बेचारे पंडितजी हफ्ते में दो बार आते हैं; मगर सब बेकार
पं. गंगानाथ झा संस्कृत के विद्वान थे. उन्हें जवाहर को संस्कृत और हिंदी सिखाने का काम सौंपा गया था. मगर वे ज्यादा कुछ सिखा न सके.
अब मेरे पीछे दोहराओ – अहं गच्छामि...
कितना नीरस! यह तो मैं कभी सीख न पाऊंगा.
मगर मि. ब्रूक्स के साथ पढ़ना निराला ही अनुभव होता था.
आपने ये कांच की नलियां और कुप्पियां किस-लिए खरीदीं, मि. ब्रूक्स?
हम अटारी पर एक प्रयोग-शाला बनायेंगे.

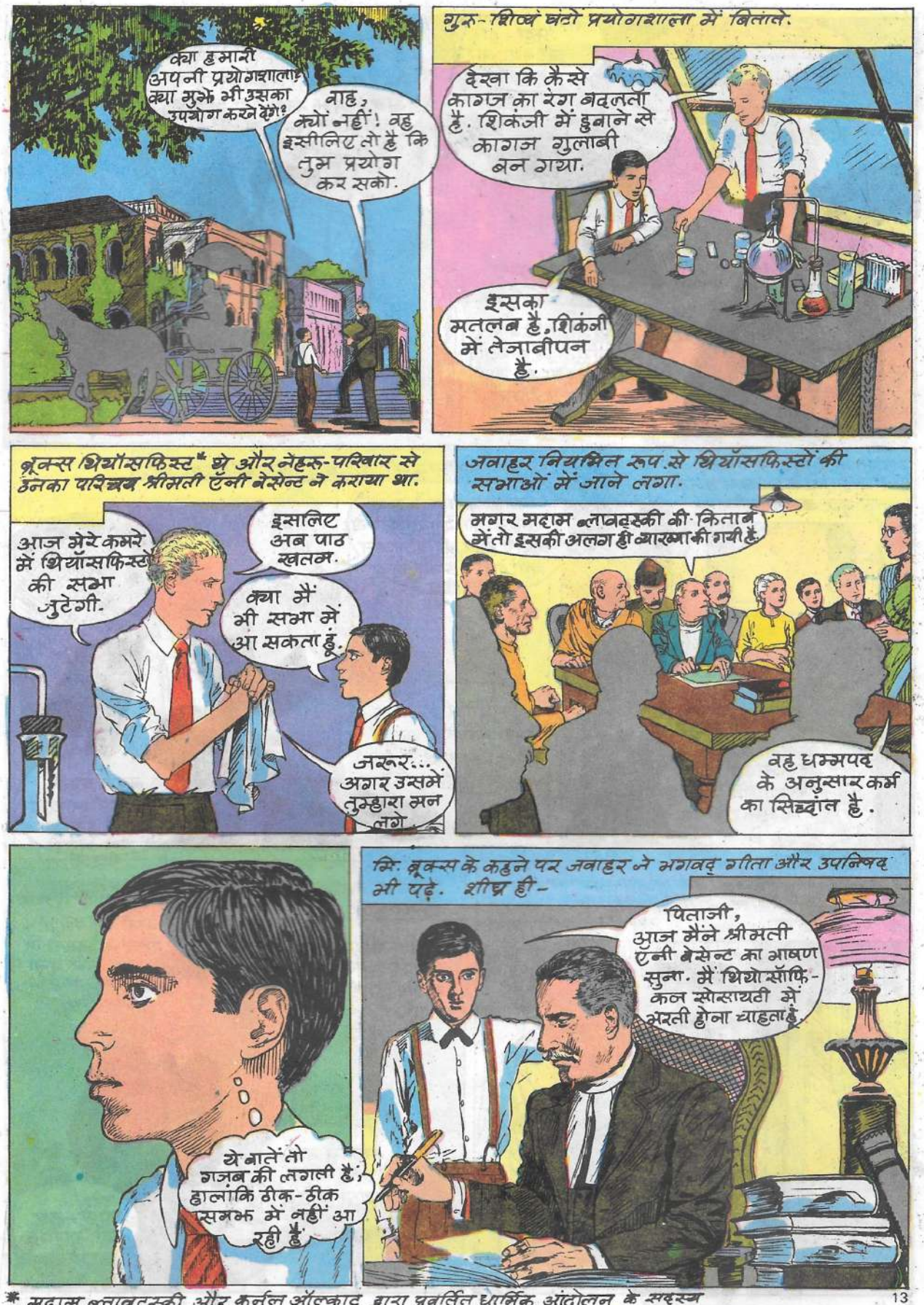

* मदाम ब्लावट्स्की और कर्नल ऑल्काट द्वारा प्रवर्तित धार्मिक आंदोलन के सदस्य 'थियॉसफिस्ट' कहलाते हैं.

अहा - हा! तुम क्या करना चाहते हो?
थियोसॉफिकल सोसायटी में भरती होना चाहता हूं. मुझे आपकी इजाजत चाहिये
जरूर मेरी इजाजत है. तुम अब बड़े लड़के हो- तेरह साल के. जरूर तुम अब समझ सकते हो कि क्या चीज तुम्हारे लिए अच्छी है
पिता की अनुमति पा कर जवाहर ने राहत तो महसूस की, मगर उनके कमरे से निकलते हुए उसने सोचा-
पिताजी वकील तो बहुत बढ़िया होंगे, पर खास धार्मिक नहीं हैं जरूर वे मुझपर हंस रहे थे.
मगर मोतीलाल को हंसी अकारण नहीं आयी थी.
साहब, आपने छोटे साहब को सोसायटी में भरती होने की इजाजत क्यों दे दी? अभी तो वे बहुत छोटे हैं.
मुंशीजी, उसे अपने ही तजुरबे से सीखने दीजिए.
बहुत पहले मैं भी सोसायटी में भरती हुआ था. बाद में मैंने मेंबरी छोड़ दी.
इस तरह तेरह बरस की उम्र में जवाहरलाल को स्वयं श्रीमती एनी बेसेन्ट ने थियॉसफी में दीक्षित किया.
किशोर जवाहर कुछ महीने थियॉसफी में डूबा रहा.
अगले हफ्ते तुम मेरे जन्म-दिन की पार्टी में तो आओगे न?
नहीं. मैं थियॉसफी के जल्से में भाग लेने बनारस आ रहा हूं.
अजीब बात है! वहां तुम क्या करोगे?
छोड़ो, तुम नहीं समझ पाओगे.

वाराणसी

मि. ब्रूक्स की दुर्भाग्यपूर्ण मृत्यु के साथ थियॉसफी में जवाहर की दिलचस्पी भी खत्म हो गयी. पर इस बीच एक और घटनाने उसके मन को उत्तेजित कर दिया.

आज का अखबार कहां है, मुंशीजी?

रोज की तरह तुम्हारे पिताजी के पढ़ने के कमरे में है. क्यों बात क्या है?

मुझे रूस-जापान युद्ध की खबरें पढ़नी हैं.

उसने जापान पर कई पुस्तकें पढ़ डालीं...

THE Tale OF Genji

LADY MURASAKI

जापानी कहानियां दिलचस्प होती हैं, हालांकि उनका इतिहास घपले में डालता है.

... और अनेक देशों के देशभक्तों के बारे में भी.

मैं भी अपने देश की आजादी के लिए लड़ूंगा.

सन 1905 में मोतीलाल ने महसूस किया कि उनके बेटे की पढ़ाई ठीक से नहीं हो रही है.

हमने बहुत गवर्नेसें रखीं, ट्यूटर रखे...

... और अब तो मि. ब्रूक्स भी नहीं रहे. सो मैंने जवाहर को इंग्लैंड में किसी पब्लिक स्कूल* में भरती कराने का फैसला किया है.

आप उसे विलायत भेज देंगे?

यही उसके लिए अच्छा होगा, स्वरूपरानी.

हम लोग खुद जा कर उसे हैरो में दाखिल करायेंगे.

इस तरह मई 1905 में जब जवाहर 15 बरस का था, सारा परिवार इंग्लैंड रवाना हुआ.

* खर्चीले आवासी स्कूल

हैरो में-
आप डॉ. जोसेफ वुड हैं न ?... मैं मोतीलाल नेहरू हूं.
और यह है आपका नया विद्यार्थी जवाहर.
आओ, आओ ! मैं तुम्हारा ही इंतजार कर रहा था.
कक्षाएं सितंबर तक शुरू नहीं होंगी. पर इस बीच तुम एंट्रेंस परीक्षा की तैयारी कर डालो और थोड़ी लैटिन भी सीख लो.
अपने बेटे को उसके गुरुजनों के सुपुर्द करके मोतीलाल ने यूरोप का तूफानी दौरा किया और भारत रवाना होने से पहले जवाहर को लिखा –
तुम्हारे रूप में हम अपनी सबसे प्यारी संपत्ति यहां छोड़ कर जा रहे हैं, सवाल तुम्हारे भविष्य की आर्थिक व्यवस्था करने का नहीं है, वह तो मैं अपनी एक साल की कमाई से कर सकता हूं. सवाल तुम्हें असली मनुष्य बनाने का है, जो कि तुम जरूर ही बनोगे... यह तो मैं तुमसे जुदा होते समय ही समझ पाया कि मुझे तुमसे कितना अधिक प्यार है.
पिता के इस विश्वास ने शायद जवाहर को हैरो के जीवन के अनुरूप अपने को ढालने में मदद दी.
"मैं आज फुटबॉल खेला, या कहना चाहिए मैंने खेलने की कोशिश की... मैंने सुबह फिर से हजामत बनायी और फोटो खिंचवाया.
" मुझे इतनी जल्दी हजामत नहीं बनानी चाहिए थी, मगर मैं फोटो में साफ हजामत किया हुआ दिखना चाहता था.
" अब अगली हजामत काफी दिन बाद ही बनेगी."

जवाहर मन लगाकर पढ़ता और खेलों में भी भाग लेता. मगर उसके सहपाठियों की तरह उसके मन पर खेल हर-दम छाये नहीं रहते थे. उसकी दिलचस्पियां व्यापक और विविध थीं.

'जो' नेहरू का विविध विषयों का ज्ञान कई बार अध्यापकों को चकित कर देता था. जनवरी 1906 में –

सिर्फ जवाहर मंत्रिमंडल के सब सदस्यों के नाम और विभाग बता सका, हालांकि वह खुद विदेशी था.

हैरो के प्रधानाध्यापक जोसेफ वुड ने 19 मई 1906 को मोतीलाल को लिखा.

यों तो जवाहर को लगता था कि वह हैरो में पूरी तरह 'फिट' नहीं होता, लेकिन उसने पूरी-पूरी मेहनत की और दो बार कक्षा में अव्वल भी आया.

युवा नेहरू को वह किताब इतनी पसंद आयी कि उसके अगले दो खंड उसने फौरन खरीद लिये.

ब्रिटिश अखबारों में भारत की खबरें न के बराबर छपती थीं. इसलिए जवाहर ने अपने पिता से आग्रह किया कि भारत के अखबार नियमित रूप से भिजवाया करें. पिता के पत्र राष्ट्रीय घटनाओं से भरे रहते...

हम ब्रिटिश भारत के इतिहास के सबसे नाजुक दौर में से गुजर रहे हैं. अगर यह आंदोलन जारी रह सका तो भारत लौटने पर तुम उसे बहुत बदला हुआ पाओगे...

... मगर मा की चिट्ठियां मुहब्बत से भरी और निजी किस्म की होतीं.

अहा-हा! खयाल रखना कि ठंड न लगे. हा-हा!

भरपूर कपड़े पहना करो. ओवरकोट जरूर पहनना. बिस्तर पर मोटा कंबल बिछा कर नया कंबल ओढ़ कर सोया करो.

पचीस साल बाद हैरो के उनके छात्रावास-अध्यक्ष ने अपने शिष्य जवाहर के बारे में लिखा-

नेहरू भला लड़का था... शांत और सुसंस्कृत. वह अपनी भावनाएं ज्यादा प्रकट नहीं करता था, मगर महसूस होता है कि उसमें चरित्र की शक्ति है. मुझे नहीं लगता कि वह बहुत विद्यार्थियों को अपनी राय बताता होगा, या अध्यापकों को ही, जिनके बीच उसका अच्छा नाम था, क्योंकि वह मेहनती था और शायद ही कभी कोई कठिनाई पैदा करता था.

कुछ मिला कर जवाहर को अपना हैरो-प्रवास अच्छा लगा. वह रायफल क्लब और कैडेट कोर का सदस्य था.

वह हिंदुस्तानी लड़का अच्छा सैनिक बन सकता है.

मगर 1907 में अठारह साल की उम्र में जवाहर को लगने लगा कि हैरो के हिसाब से वह बड़ा हो गया है. उसने केम्ब्रिज की एन्ट्रेन्स परीक्षा दी और पास हुआ.

स्कूल छोड़ने की उसे खुशी थी. मगर स्कूल में आखिरी रात को उसका तकिया आंसुओं से भीग गया था.

मैं नहीं जानता था कि इस जगह से मुझे इतना लगाव हो गया है.

अक्तूबर 1907 में जवाहर ने ट्रीनिटी कालेज, केम्ब्रिज में दाखिला लिया.
अहा! आजादी पा ली! विश्वविद्यालय में घूमते हुए मुझे लग रहा है कि मैं बालिग हो गया हूं.
वह टेनिस खेलता, खूब घुड़सवारी करता और उसे केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के नौका-दल का कर्णधार भी बनाया गया.
विज्ञान की स्नातक-परीक्षा के लिए जवाहर ने विषय लिये थे- रसायनशास्त्र, भूगर्भशास्त्र और वनस्पतिशास्त्र. मगर उसका अध्ययन बहुत व्यापक था.
मि. नेहरू, आपने थैकरे का 20 खंडों का सेट खरीदते हुए कहा था कि डिकन्स का 20 खंडो वाला सेट भी खरीदना चाहते हैं. क्या हुआ?
मैंने पिताजी को खत लिखा था. उनका जवाब आया कि मैं तुम्हारे लिए पूरा पुस्तकालय तो नहीं खरीद सकता.
कालेज में भरती होने के एक हफ्ते-भर में जवाहर 'मैगपाई और स्टम्प' नाम की वाद-विवाद गोष्ठी का भी सदस्य बन गया. मगर वहां वह एक भी बहस में बोला नहीं. सत्र के अंत में-
आप पूरे सत्र में एक बार भी नहीं बोले.
आपको नियम तो मालूम है न, मि. नेहरू?
खूब जानता हूं. मैं जुर्माना दूंगा.
सो भी खुशी से. वह लोगों के बीच भाषण देने से आसान है.
मगर गोष्ठी के कक्ष में अंगीठी के पास देर रात तक बैठकर बतियाने में उसे बड़ा आनंद आता था.
अरे, 12 कभी के बज गये! अब जा कर सोया जाए.
और ठंड भी इतनी है कि वह कंबल से ही मिटेगी. दार्शनिक बहस की गरमी से नहीं.

केम्ब्रिज के भारतीय छात्रों की अपनी ही वाद-विवाद गोष्ठी थी. उसका नाम था 'मजलिस'! उसमें वे भारत के राजनीतिक मसलों पर बहस करते. ये बहसें वस्तुस्थिति से बहुत कटी रहतीं. उधर स्वदेश में नयी चेतना लहरा रही थी.

महाराष्ट्र में बाल गंगाधर तिलक अपने ओजीले भाषणों और लेखों से जनमत को जागृत कर रहे थे.

पंजाब में लाला लाजपत राय और सरदार अजीतसिंह आजादी की अलख जगा रहे थे.

बंगाल में बिपिन चंद्र पाल और अरविंद घोष ने राष्ट्रभक्ति का ज्वार ला दिया था.

इनमें से कई नेता इंग्लैंड आने पर केम्ब्रिज पधारते और जवाहर ने मजलिस में उनके भाषण सुने.

वह देखो! आ गये काउंट ज़ेपलिन अपने हवाई यान में.

LZ10 GRAF ZEPPELIN

1909 में कालेज की छुट्टियों में जवाहरलाल ने मोतीलाल के साथ संक्षिप्त यूरोप-यात्रा की. बर्लिन में एक महत्वपूर्ण घटना देखी.

आसमान में उड़ पाना कितनी रोमांचकारी बात है! सपनों में तो मैं भी कई बार उड़ा हूं - बादलों से ऊपर.

मि. नेहरू, क्या आप काउंट जेपलिन का चित्र होटल की ओर से भेंट में स्वीकार करेंगे?

वाह! नेकी और पूछ-पूछ? आपको शुक्रिया!

जवाहरलाल के भावी जीवन के विषय में पिता-पुत्र में पत्रों में अक्सर चर्चा होती थी. अब :-

मेरी इच्छा है कि तुम आई. सी. एस.* जॉइन करो. मगर उसकी परीक्षा में बैठने लायक अभी तुम्हारी उम्र नहीं हुई है.

हां, अभी तो तीन साल रुकना पड़ेगा.

नहीं, हम चाहते हैं, तुम इससे पहले घर लौट आओ. शायद यह सबसे अच्छा रहेगा कि तुम कानून पढ़ो.

मेरा भी यही खयाल है.

1910 में जवाहरलाल द्वितीय दर्जे में ससम्मान स्नातक हुए. आखिरी परीक्षा से पहले ही उन्होंने बैरिस्टरी के लिए इनर टेंपल में दाखिला ले लिया था.

स्नातक होने के बाद जवाहरलाल तफरीह के लिए कुछ मित्रों के साथ नॉर्वे गये.

लो आखिर होटल पहुंच ही गये.

मुझे फौरन नहाना है. बदन गंधा रहा है.

* उस समय की भारतीय प्रशासनिक सेवा 'इंडियन सिविल सर्विस.'

मगर उस छोटे-से पहाड़ी होटल में–
नहाओगे? यहां कोई गुसलखाना नहीं है.
चाहो तो पास के नाले में हाथ-मुंह धो आओ.
हाथ पोंछने के नैपकिन ले कर 'ओ' और उनके दोस्त नहाने चले.
देखो, वह रहा पहाड़ी नाला!
बाप रे! इसका पानी बर्फीला है!
दैया रे! नीचे फिसलन भी है!
ओ! संभल कर चलना.
मगर जवाहरलाल फिसल कर गिरे और धारा उन्हें बहा ले चली.
उनके साथी ने झट से पानी से निकल कर नाले के किनारे दौड़ लगायी और हाथ बढ़ा कर जवाहर को बाहर खींच लिया.
नहीं से 200 गज दूरी पर प्रपात था.
देख रहे हो, आगे क्या है? मारे जाते बच्चू!
अब तो बच गया न! मगर रहा बड़ा रोमांचक अनुभव.

अगले दो बरस जवाहरलाल लंदन रह कर कानून पढ़ते रहे.

वक्त की कमी न थी. घर से पैसा भी भरपूर आता था. जवाहरलाल खर्चीला और फैशनेबल जीवन जीते थे.

1912 की गरमियों में वे बैरिस्टर बन गये. सात साल के अपने इंग्लैंड निवास पर नजर डालते हुए उन्होंने घर लिखा—

जून 1912 में जवाहरलाल भारत वापस लौटे. नेहरू-परिवार उस समय इलाहाबाद के घाम से बचने मसूरी गया हुआ था.

मां को बांहों में उठाने के बाद जवाहरलाल अपनी सबसे छोटी बहन कृष्णा की ओर मुड़े, जो उनके इंग्लैंड जाने के बाद जनमी थी.

इंग्लैंड से लौटने के बाद शीघ्र ही जवाहरलाल अपने पिता के दफ्तर में बैठने और हाईकोर्ट में वकालत करने लगे.

कानूनी किताबों में मामले कितने सजीव और जटिल लगते हैं! मगर असली वकालत में ऊबाऊ होते हैं. और अदना भी.

जीवन उन्हें बंधे-बंधाये ढर्रे का और सरासर नीरस लगता.

वही के वही लोग- अदालत में भी, लाइब्रेरी में भी.. कितना ऊबाऊ!

दिसंबर 1912 में जवाहरलाल बांकीपुर (पटना) में जीवन में पहली बार कांग्रेस के सालाना जलसे में शामिल हुए.

यह तो राजनीतिक सभा के बजाय इंग्लैंड का कोई सामाजिक समारोह लगता है.

जवाहरलाल ने जिस पहले सार्वजनिक काम में हिस्सा लिया वह था- दक्षिण अफ्रीका में मो. क. गांधी के नेतृत्व में चल रहे सविनय प्रतिरोध के लिए चंदा इकट्ठा करना. 10 जून 1916 को उन्होंने इलाहाबाद में पहला सार्वजनिक भाषण किया.

1910 का भारतीय प्रेस एक्ट बहुत शरारत-भरा और जहरीला है. वह प्रेस का गला घोटता है.

8 फरवरी 1916 को वसंत पंचमी के दिन जवाहरलाल का विवाह, 16 वर्षीया कमला कौल के साथ हुआ. शाही ढंग की धूमधाम थी. सैकड़ों की तादाद में बाराती थे. सबको ठहराने लायक होटल दिल्ली में तब नहीं था. शहर के बाहर तंबुओं का शिविर बसाया गया, बारात इलाहाबाद से स्पेशल रेलगाड़ी में दिल्ली पहुंची थी.

सन 1916 में लखनऊ में अखिल भारतीय कांग्रेस के सालाना जलसे में कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच मशहूर "लखनऊ पैक्ट" हुआ. इसी जलसे में जवाहरलाल पहली बार गांधीजी से मिले.
फिर तो वे गांधीजी और उनके तरीकों की ओर अधिकाधिक खिंचते चले गये. उन पर शुरू में गांधी की क्या छाप पड़ी, इसके बारे में उन्होंने लिखा है-
मुझे तो गांधी ने सरासर धराशायी कर दिया. वे जोरदार धारा की तरह थे, एक रोशनी की तरह जिसने अंधेरे को चीर डाला और हमारी आंखों पर चढ़े परदे हटा दिये, तूफानी हवा की तरह जिसने बहुत चीजें उलट-पुलट दीं. व ऊपर से अवतरित नहीं हुए, बल्कि मानो हिंदुस्तान के लाखों लोगों में से उभरे
19 नवंबर 1917 को जवाहरलाल और कमला के एक बेटी जनमी. उसका नाम रखा गया_ इंदिरा प्रियदर्शिनी.
इलाहाबाद में होमरूल लीग कायम हुआ. मोतीलाल उसके अध्यक्ष और जवाहरलाल सेक्रेटरी बनाये गये. 1919 में मोतीलाल नेहरू ने इलाहाबाद से अपना ही अंग्रेजी दैनिक शुरू किया. नाम था 'इंडिपेन्डेन्ट'. शुरुआत ही उसने रौलट विधेयकों की जोरदार आलोचना के साथ की.
भाई ये रौलट बिल क्या हैं?
ये बिल पास होकर जब कानून बन जायेंगे तब सरकार जिसे भी राजनीति अपराधी समझे उसे गिरफ्तार कर सकेगी- न मुकद्दमा चलेगा, न अपील हो सकेगी.
The Independ
गांधीजी को यह अपने अनूठे हथियार 'सत्याग्रह' के इस्तेमाल के लिए एक और अवसर दिखाई दिया.
अब हम क्या करें?
क्या करें? बिल ज्योंही पास होकर कानून बनें, हम सत्याग्रह करेंगे.
जब वाइसराय ने ये कदम वापस लेने की गांधीजी की अपील अनसुनी कर दी, उन्होंने 'सत्याग्रह सभा' स्थापित की.
सत्याग्रह सभा के सारे सदस्य यह प्रतिज्ञा लें कि वे रौलट एक्ट का उल्लंघन करेंगे और वह उनमें से किसी पर लागू किया गया तो खुल्लम खुल्ला और इरादतन जेल की राह चुनेंगे.

गांधीजी के रुख के बारे में मोतीलाल और जवाहरलाल के विचारों में बहुत विरोध था.

गांधीजी का तरीका सीधा और खुला है. शायद कारगर भी हो. मुझे सत्याग्रह सभा में शरीक होना ही चाहिये.

ऐसा तुम हर्गिज नहीं करोगे. यह असंवैधानिक है.

बाप-बेटे के बीच सारे दिन करारी बहस होती रही.

तुमने सोचा कि इसका नतीजा क्या होगा? तुम्हें जेल आना पड़ सकता है.

तो क्या हुआ? जिस संशय और निराशा में हम जी रहे हैं, उससे तो जेल भली.

उस रात बेटा देर तक आनंद भवन के बगीचे में चहलकदमी करता रहा...

पिताजी को मैं कैसे यकीन दिलाऊं.

... और उधर पिता ने अपने कमरे में नंगे फर्श पर सोने की कोशिश की-

देखूं तो, नंगे फर्श पर नींद आती है या नहीं. मेरा मूर्ख बेटा जेल गया तो उसे यही करना पड़ेगा.

मोतीलाल के निमंत्रण पर गांधीजी इलाहाबाद आये. दोनों में लंबी बातचीत हुई.

पिता से बातचीत का नतीजा यह हुआ कि गांधीजी ने बेटे से अपील की –

पिताजी पर अभी बहुत जोर मत डालो. उनका दिल न दुखाओ.

बड़े स्नेह से गांधीजी ने जवाहर को सब्र रखने को कहा.

मोतीलाल जवाहरलाल को राजनीतिक सरगरमी में कूदने से रोक तो सके, मगर ज्यादा दिन नहीं. गांधीजी ने देश को आह्वान दिया कि 30 मार्च को सत्याग्रह - दिवस मनाया जाये.

दिल्ली को छोड़ कर बाकी जगह तारीख बदल कर 6 अप्रेल कर दी गयी. सब कहीं सब काम ठप हो गया. इलाहाबाद में जवाहरलाल ने हड़ताल को सफल बनाने के लिए खून-पसीना एक कर दिया. सारा देश उस दिन हड़ताल पर था.

पुलिस ने उस दिन दिल्ली, लाहौर, अमृतसर और दूसरे दर्जनों शहरों में निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलायीं. बदले में जनता ने फसाद किया.

अमृतसर में जनरल डायर ने जलियांवाला बाग में जमा लोगों पर बिना चेतावनी के गोली चलवा दी. वह जगह चारों ओर से दीवारों से घिरी हुई थी. भयंकर नरसंहार हुआ.

फायर!

बाद में तथ्य इकट्ठे करने जवाहरलाल कई बार जालियांवाला बाग गये.

जान बचाने लोग इस कुएं में कूद पड़े.

बहुतों ने दीवारें फांदने की कोशिश की. मगर जनरल डायर के आदमियों ने उन पर गोलियां दागीं. गोलियों के ये निशान देखिए.

पंजाब में घटी इन भयानक घटनाओं के बाद पिता-पुत्र आपसी मतभेद भुला कर काम में जुट गये.

दिसंबर 1919 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का सालाना अधिवेशन अमृतसर में हुआ. मोतीलाल नेहरू अध्यक्ष बनाये गये. मगर गांधी सबकी आंखों के तारे थे.

महात्मा गांधी की...

जय!

यह नारा भारतीय राजनीति के गगन में आगे वर्षों तक गूंजता रहा, जैसे गांधी टोपी सारे देश ने अपना ली.

अपने अहिंसक असहयोग का प्रचार करने के लिए गांधीजी देश-भर में घूम-घूम कर भाषण करने लगे. बहुत बार जवाहरलाल उनके साथ जाते.

यह बहुत ही बड़ी जंग होगी. विरोधी बहुत जबरदस्त हैं. अगर आप इस जंग में कूदना चाहें तो आप को सब कुछ गंवाने को तैयार रहना पड़ेगा.

अगर आप मुझे नेता चुनें तो आपको मेरी शर्तें माननी होंगी.

ये इतने नरम हैं, पर साथ ही पूरे तानाशाह हैं. तराशे हुए हीरे की तरह पैने और कठोर.

मई 1920 में जवाहरलाल अपनी मां और पत्नी के साथ मसूरी में थे. संयोग से अफगानों का एक प्रतिनिधि-मंडल भी उसी होटल में ठहरा हुआ था.

हद है! हमें मसूरी छोड़ने का हुक्म मिला है. सरकार को शक है कि मेरी अफगानों के साथ कुछ सांठ-गांठ है. तमाशा है!

पंद्रह दिन बाद सरकारी हुक्म तो रद्द हो गया. मगर इस बीच कुछ बातें हुईं, जिन्होंने जवाहरलाल के जीवन को गहरे प्रभावित किया. जब वे इलाहाबाद लौटे -

सुना आपने? गांवों से चल कर कोई 200 किसान इलाहाबाद आये हैं और जमुना के किनारे डेरा डाले पड़े हैं.

क्यों भला?

जब जवाहरलाल और उनके मित्रों ने आ कर पूछताछ की तो किसानों ने अपनी रामकहानी सुनायी.

जमींदार हमें सताते हैं. वे हमसे ज्यादा और ज्यादा टिकस वसूलते हैं.

हम किस हालत में जीते हैं, खुद आ कर देखिए.

जवाहरलाल उनके गांवों में गये. जीवन में पहली बार उन्होंने घोर गरीबी अपनी आंखों से देखी, किसानों के दुख और कष्ट की कहानियां सुनीं.

हम सुख-चैन में जीते हैं, जब कि हमारे देश-भाई भूखों मर रहे हैं. फिर भी जब वे हमसे बात करते हैं उनकी आंखें आशा से चमक उठती हैं.

वही युवक जो गोष्ठी में बोलने से बचने के लिए जुर्माना चुकाया करता था, अब देहातियों की सभाओं में सहज भाषा में बिना हिचक-झिझक के भाषण करने लगा.

कितना सहज विश्वास! वे समझते हैं, मैं उन्हें अकल दे रहा हूं. असल में तो वे मुझे अकल दे रहे हैं.

इस तरह जनता और उसके अजीज नेता के बीच आदान-प्रदान शुरू हुआ. जो दशकों तक चलता रहा. आगे चल कर जो शख्स आधुनिक भारत का निर्माता बना, वह इस तरह सार्वजनिक जीवन में उतरा.